जमाने ने सुनी संघर्ष की जो कहानी...हम उस कहानी के किरदार हैं

ट्रक चलाने वाले पिता के बेटों ने ईमानदारी, मेहनत, संघर्ष व संयम से खड़ा किया होटल साम्राज्य

आज नाम ही काफी है में होटल एंड रेस्टोरेंट एसोसिएशन (वेस्टर्न इंडिया) मप्र के अध्यक्ष सुमित सूरी व उनके भाई हेमंत सूरी

आज होटल, मैरिज गार्डन व कंस्ट्रक्शन कंपनी के रूप में ओमनी ग्रुप इंदौर का जाना-पहचाना ब्रांड है। इसके संस्थापक-संचालक हैं सुमित सूरी व उनके छोटे भाई हेमंत सूरी। आज जमाना इनके चमकदार आर्थिक साम्राज्य को देखता है तो चकित हो जाता है, लेकिन इन दोनों भाइयों ने यह चमक कठोर परिश्रम, ईमानदारी, संघर्ष, जुनून व माता-पिता से मिले संस्कारों के कारण पाई है। कभी इनके पिता ट्रक चलाकर परिवार का भरण-पोषण करते थे। इन दोनों भाइयों ने पिता के संस्कार व मां के आशीर्वाद को अपने संघर्ष के पसीने में मिलाकर इतनी मेहनत की कि आज ये इंदौर के बड़े धनाढ्य समूहों में शामिल हैं। आज नाम ही काफी है स्तंभ में इन्हीं दोनों भाइयों को चकित कर देने वाली

आज जो चमचमाती इमारत नजर आ रही है, उसके निर्माण में कितना परिश्रम हुआ, उसकी संकल्पना को किस सोच के साथ साकार किया गया और किस समर्पण व लगन से उसे आकार दिया गया, यदि उसे देखा-समझा जाए तो हम जान पाएंगे कि सफलता मिलती कैसे है। यह कहना है ओमनी ग्रुप के संस्थापक अध्यक्ष सुमित सूरी का, जिन्होंने अपनी सोच और अपनों के साथ से आज एक ऐसा मुकाम बना लिया है, जो इंदौर को अलग पहचान दे रहा है। इनके साथ कंधे से कंधा मिलाकर सपनों को साकार करने का काम इनके छोटे भाई हेमंत सूरी कर रहे हैं।

होटल एंड रेस्टोरेंट एसोसिएशन (वेस्टर्न इंडिया) मध्य प्रदेश के अध्यक्ष सुमित कहते हैं, मैंने बचपन से पिता को बहुत परिश्रम करते देखा, इसलिए हमेशा यही बात मन में रही कि जल्द से जल्द कुछ ऐसा किया जाए कि उनकी परेशानियों को कम किया जा सके। मगर इसके साथ ही यह बात भी जहन में थी कि जल्दी सफलता पाने के चक्कर में ऐसा कुछ नहीं करना है कि परिवार का नाम बदनाम हो। जब मैं करीब 15-16 वर्ष का हुआ, तब तक पिता ट्रक चलाना छोड़कर कंस्ट्रक्शन की दुनिया में आ चुके थे। मैं भी अब उनका साथ देने लगा, साथ ही पढ़ाई भी जारी रही। छात्र जीवन में छात्र राजनीति का भी हिस्सा बना, लेकिन पिताजी चाहते थे कि मैं किनारा रहूं और ऐसा कोई कार्य न करूं कि स्वभाव उग्र हो, इसलिए वे

सुमित सूरी। बाएं। अपने छोटे भाई हेमंत सूरी के साथ।

गए। इस चमचमाते शहर ने मेरी आंखों में होटल शुरू करने का सपना दे दिया। सपने को पूरा करने के लिए जरूरी था कि हॉस्पिटलिटी इंडस्ट्री को समझा जाए। मैंने इसे पाठ्यक्रम के रूप में अपनाया। पढ़ाई पूरी की और पढ़ाई का व्यावहारिक ज्ञान समझने के लिए करीब दो वर्ष तक शहर की होटल में नौकरी की। एक तरफ नौकरी जारी थी, दूसरी तरफ मन में सपना भी आकार ले रहा था कि हमारे परिवार की अपनी एक होटल

सिद्धांतों से कभी समझौता नहीं किया: शुरुआती में एक दौर यह भी था, जब पूरे साल में महज 30 दिन ही गार्डन की बुकिंग होती थी। मगर मैंने कभी पीछे हटना नहीं सीखा, इसलिए वहां कवि सम्मेलन जैसे आयोजन करना शुरू किए। हमने अपने बुरे समय से सीखा और उसी में से समस्या का हल निकालकर आगे बढ़ते गए। जब भी कुछ करने का मन बनाया, तो पहले कई बार सोचा, लेकिन जब शुरुआत कर दी तो फिर पीछे कदम नहीं करना इसलिए सफलता के शार्टकट के चक्कर में कभी अपने सिद्धांतों से समझौता नहीं किया।

सुमित कहते हैं, हमने तय किया कि मेहनत से पीछे नहीं हटना है, ईमानदारी से मुंह नहीं मोड़ना है, माता-पिता के आदेश और इच्छा की अवहेलना नहीं करना है व नियम, नीति विरुद्ध काम नहीं करना है। इन्हीं सिद्धांतों के दम पर आज होटल, मैरिज गार्डन व एक विद्यालय है। पिता चाहते थे कि युग निर्माण में हमारी

एक और एक मिलकर हो गए 11

सुमित बताते हैं कि मैंने वर्ष 1995 में जब होटल के सपने को साकार करने की शुरुआत की, तब तक छोटा भाई हेमंत सूरी भी मेरे सपने को अपना बनाकर साथ देते हुए मुझसे जुड़ गया। अब हम एक और एक दो नहीं बल्कि ग्यारह हो गए। होटल से जो आय होती थी, उसे हम होटल के ही विस्तार में लगाते थे। साथ ही कंस्ट्रक्शन का कार्य भी जारी था। हालांकि दो कार्य करना सहज नहीं था, लेकिन हम तो खुद को 11 मानते थे। चूंकि मैं पहले दूसरों की होटल में कार्य कर चुका था इसलिए अपनी होटल में भी काम करने में संकोच नहीं किया। होटल को कभी दूसरों के भरोसे नहीं छोड़ा। हम दोनों में से एक भाई तो होटल में सदैव उपस्थित रहता ही था। अपने विजिटिंग कार्ड पर कभी अपना पद नहीं लिखा और एक कर्मचारी की भांति ही कार्य किया। जो भी संबंध बनाए, वे अपने पद से नहीं बल्कि व्यवहार से बनाए।

पिता ओम, मां निर्मल, मिलकर बना ओमनी

ओमनी ग्रुप के नाम के बारे में सुमित और हेमंत बताते हैं, यह नाम हमने अपने अपने माता-पिता के नाम के आधार पर रखा। पिता का नाम ओम और माता का नाम निर्मल था। इन दोनों को मिलाकर बना ओमनी। यह नाम रखने की एक वजह यह भी थी कि हम उनके सिद्धांतों, निर्देशों और शिक्षा का अनुसरण करना चाहते हैं और सदैव उनकी ताकत अपने साथ रखना चाहते हैं। इस नाम में उनकी सीख है। पिता यही कहते थे कि विकास के लिए कभी कर्ज मत लो क्योंकि उन्होंने कर्ज की समस्या को भुगता था। इसलिए जब मैंने आगे बढ़ने का सोचा, तो इंदौर विकास प्राधिकरण से प्लाट लिए और उस प्लाट पर ओमनी गार्डन के नाम से मैरिज गार्डन शुरू किया। मैरिज गार्डन इसलिए क्योंकि इसमें निवेश कम होता है।